विषय-सूची

विषय	श्लोक
अधिकारीका उपपादन	१
आत्माका अज्ञान ही सब अनर्थोंका मुख्य कारण है, यह कथन	१
प्रस्तुत प्रकरणका विषयोपन्यास	४
प्रकरणसे प्रतिपाद्य चार विषयोंका (अनर्थ, अनर्थहेतु, पुरुषार्थ और पुरुषार्थहेतुका) प्रतिपादन	७
ज्ञान ही मोक्षका साधन है, कर्म नहीं, यह प्रतिपादन ...	८
प्रतिज्ञात विषयकी पुष्टिके लिए पूर्वपक्ष—(ज्ञानको स्वीकार करते हुए) कर्म ही मोक्षका साधन है, यह कथन	९
केवल ज्ञान विधिप्राप्त नहीं, यह प्रतिपादन	१५
(ज्ञानको मुक्तिका साधन माननेपर भी) केवल ज्ञान मुक्तिका साधन नहीं, कर्मसमुच्चित ज्ञान ही मुक्तिका साधन है, यह कथन	२०
पूर्वपक्षका खण्डन—	२२
चारों प्रकारके कर्मफलसे मुक्ति नहीं (मुक्ति चारों प्रकारके कर्मका फल नहीं है) यह कथन	२४
केवल आत्म-ज्ञानसे ही मुक्ति होती है, यह निरूपण ...	२९
ज्ञान (कर्मके समान अविद्याजन्य होनेपर भी) अज्ञानका निवर्तक कैसे हो सकता है, इस शङ्काका निराकरण-	३६
कर्म मुक्तिमें किस प्रकार उपयोगी है, यह प्रतिपादन ...	४५
कर्मानुष्ठानसे चित्तशुद्धि द्वारा वैराग्य	४७
वैराग्योत्तर सर्वकर्मसंन्यासका अधिकार	४९
इस तरह कर्म मुक्तिमें उपयोगी है यों उपसंहार ...	५०
मुक्ति कर्मसे साध्य नहीं है, यह कथन	५३
कर्म और ज्ञानके समसमुच्चयका खण्डन	५५

विषय	श्लोक
ज्ञान और कर्मके समुच्चयाभावमें अन्य कारणोंका निर्देश ...	६६
भेदाऽभेदवादीके मतमें भी ज्ञान-कर्मके समुच्चयका असंभव कथन	६८
कर्मवादियोंकी उक्तियोंका क्रमशः खण्डन ...	८०
विधिबोधित न होनेके कारण वेदान्त-वाक्योंका प्रामाण्य नहीं हो सकता, इस शङ्काका खण्डन	८७
स्वतःसिद्ध आत्मवस्तुमें अविश्वास नहीं हो सकता ...	८६
आत्मामें कर्तृत्व नहीं है	६२
आत्मामें भोक्तृत्व नहीं है	६४
देहाभिमानी पुरुषका ही कर्ममें अधिकार है, अभेददर्शीका नहीं	६६
ज्ञानसे ही मुक्ति होती है, इसका उपसंहार	६६

द्वितीय अध्याय

उत्थानिका (वक्ष्यमाण अध्यायका तात्पर्य)	१
त्वंपदार्थका प्रतिपादन	१
वाक्यके बिना ब्रह्मज्ञान नहीं हो सकता है, यह प्रतिपादन ...	४
देह आत्मा नहीं, यह कथन	१६
भट्ट मीमांसकके मतका निराकरण	२४
बौद्ध मतका निराकरण	३६
अहङ्कारकी निवृत्तिसे अद्वैतभावकी सिद्धि	५३
लक्ष्य वस्तुके स्वरूपका कथन	५७
बुद्धि ही परिणामिनी है, आत्मा नहीं	७०
आत्मा ही समस्त बुद्धियोंका साक्षी है	७१–७५
आत्मा कूटस्थ–अविकारी है	८३
युक्तियों द्वारा बुद्धिका परिणामित्व और आत्माकी कूटस्थता	८६
वेदान्तके सिद्धांतपर अविश्वास असंभव	६३
सांख्य-सिद्धांतसे वेदान्त-सिद्धांतकी भिन्नता ...	६७

विषय	श्लोक
आत्मा और अनात्माका इतरेतराध्यास	१०१
तत्त्वदर्शनसे अविद्याकी निवृत्ति	१०३
इतरेतराध्यासके फलका उपसंहार	१११
जड़वस्तु का मिथ्यात्व	११४
प्रपञ्चके मिथ्यात्वका उपसंहार	११६
विद्याका फल और अध्यायका उपसंहार	११६

तृतीय अध्याय—

इस अध्यायकी पूर्वाध्यायसे सङ्गति, वाक्यसे अज्ञानकी निवृत्ति, वाक्यके व्याख्यानका उपक्रम, पद, पदार्थ और प्रत्यगात्माका सामानाधिकरण्य, विशेषण विशेष्यता और लक्ष्य लक्षण सम्बन्ध	१
ज्ञानसाधनविषयिणी प्रवृत्ति विधिप्रयुक्त है ...	३
सांख्योंकी शंका और उसका समाधान	४
उपायान्तरसे कैवल्यपक्षका निराकरण	६
लक्ष्यलक्षणकी व्याख्या	७
परिणामी (अहंकार) और कूटस्थ (आत्मा) का लक्षण ...	११
अज्ञानके कारण ही अहंकार और आत्माका सम्बन्ध है, वास्तविक नहीं, यह प्रतिपादन	१६–१७
प्रतिबन्धकी निवृत्ति होनेपर ही वाक्य द्वारा आत्मज्ञान होता है	२०
वाक्य अन्वय-व्यतिरेक द्वारा आत्माका प्रतिपादन करता है, इसकी पुष्टिके लिए श्रुतिका उदाहरण	२६
तत्त्वमस्यादि वाक्यमें प्रत्यक्षादि विरोध नहीं है, इसका उपसंहार	३६
अतीन्द्रिय पदार्थमें अभिधाश्रुति (तत्त्वमस्यादि वाक्य) का प्रामाण्य प्रतिपादन	४४
उक्त युक्तियों द्वारा आत्माके प्रमाणान्तरागोचरत्वका निराकरण	४७
पूर्वाध्यायोक्त (आत्मज्ञानोपयोगी) अन्वय-व्यतिरेकका पुनः संक्षेपसे वर्णन	५२
साङ्ख्यमतका उत्थापन और उसका समाधान	५४
	५७

विषय	श्लोक
त्वंपदार्थ तत्पदार्थ कैसे हो सकता है, इसका समाधान ...	७५
तत् और त्वं पदकी अखण्ड-एकरसार्थनिष्ठता ...	७६
त्वंपदमें प्रतीत अहंकार और तत्पदमें प्रतीत परोक्षता-की हेयता	७७
तदर्थ त्वमर्थसे अभिन्न होकर अविद्यासे उत्पन्न द्वितीयताका निराकरण कैसे करता है, ऐसी शङ्का और समाधान ...	७९
तत्-त्वंपदके लक्षणा द्वारा अखंड-आत्माके बोधनमें प्रत्यक्षादिका अविरोध	८१
'तत्त्वमसि' आदि वाक्य उपासनापरक नहीं हैं ...	८२
दृष्टान्त द्वारा वाक्य और प्रत्यक्षका परस्पर अविरोध ...	८४
शब्दादि प्रमाणोंका स्वतःप्रामाण्य	८६
उपासना और कर्मफल स्थायी नहीं है	९३
अहंवृत्तिसे आत्मा लक्षित होता है ...	९७
शब्द गौणीवृत्तिसे आत्माका बोध कराता है, मुख्यसे नहीं	१०२-१०४
शब्द अपने अर्थसे सम्बन्धित हुए बिना कैसे उसका बोध करा सकता है इसमें दृष्टान्त—	१०५
आत्मा अज्ञान और ज्ञानका आश्रय होनेसे विकारी नहीं है	१०७
श्रुति और आचार्य द्वारा आत्मबोध होनेमें शङ्का-समाधान	१०८
आत्मामें अज्ञान स्थिर नहीं है	११०
अविद्याकी धृष्टता	१११
आत्मामें किसी प्रकार भी अविद्याकी संभावना नहीं है	११२
(अन्वय व्यतिरेक रूप) अनुमानसे युक्त वाक्य द्वारा अविद्याकी निवृत्ति	११३
अज्ञाननिद्रामें प्रसुप्त जीवको श्रुति ही जगा सकती है ...	११५
वाक्यसे अन्य प्रमाण द्वारा आत्मज्ञान असंभव ...	११७
वेदन्तोंके उपासनापरक होनेमें शङ्कासमाधान ...	१२३

विषय	श्लोक
प्रसंख्यान विधिके अस्वीकारमें दोषकी आशङ्का और उसका समाधान	१२६

चतुर्थ अध्याय

पुनरुक्तिका परिहार	१
आत्मासे ही अनात्माकी सिद्धि	३
देहेन्द्रियादिमें आत्मसंशय	४
वाक्य द्वारा ही आत्माका ज्ञान होता है, यह कथन ...	७
वाक्यार्थज्ञानमें क्रमका निरूपण	९
स्वयंप्रकाशका साक्षात्कार न होनेमें कारण	१०
भौतिकी दृष्टिसे आत्मज्ञान असंभव	११
विवेकका आधार बुद्धि	१४
प्रत्यक्षादिसे अगम्य ब्रह्मका परिज्ञान केवल श्रुतिप्रमाणसे ...	१८
उक्त-विषयमें आचार्यकी उक्ति	१९
उपदेश साहस्रीका पूर्वपक्ष और उत्तर	२०
अन्वय-व्यतिरेक द्वारा पद-पदार्थके ज्ञानमें आचार्यकी सम्मति	२२
वाक्यकी एकत्वप्रतिपादकतामें आचार्यकी सम्मति ...	२४
प्रकारान्तरसे आचार्योक्त अन्वय-व्यतिरेक ...	२६
प्रकृत विषयकी पुष्टिमें आचार्यकी उक्ति ...	३१
विवेकीको आत्मज्ञान होता है, इस विषयमें आचार्यकी उक्तिका प्रामाण्य	३४
ज्ञानके साधन श्रुति आचार्यादि आत्मासे अभिन्न हैं, यह कथन	३७-३७
ब्रह्मज्ञान प्रपञ्चसे भिन्न है, या अभिन्न, इसका निर्णय ...	३८
पूर्वोक्त विषयमें कारण निर्देश ...	३९
अविद्याकी निवृत्तिके लिए वाक्यकी आवश्यकताका प्रतिपादन	४०
पूर्वोक्तविषयकी पुष्टिमें उदाहरण ...	४१
तुरीयपदकी प्राप्ति कब होती है, यह कथन ...	४२
उपदेशसाहस्रीका उदाहरण	४३